गाँधी का राज्य - Gandhian state

गाँधी जी मूलतः नैतिक दार्शनिक थे (moral philosopher) थे। आधुनिक राज्य की प्रकृति के बारे में उन्होंने कोई विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत नहीं किया है। अराजकतावादियों की भाँति उन्होंने राज्य के सन्दर्भ में विचार तो नहीं व्यक्त किये हैं फिर भी उन्होंने राज्य के सन्दर्भ में जो दृष्टि रखी है, उसे निम्न रूप में देखा जा सकता है।

1. राज्य साधन है, साध्य नहीं — गाँधी राज्य को साधन तथा व्यक्ति को साध्य मानता है। राज्य की उत्पत्ति व्यक्ति के लिए हुई है न कि मनुष्य की राज्य के लिए। गाँधी जी राज्य को सामाजिक उत्थान तथा जन-कल्याण के लिए एक साधन मानते हैं। गाँधी का कहना है कि राज्य आवश्यक है, पर व्यक्तिवादियों की भाँति गाँधी का कहना है कि जो राज्य कम से कम शासन करे और व्यक्ति को अधिक से अधिक स्वतंत्रता दे, वह सबसे अच्छा है। उन्होंने कहा कि "मैं राज्य की शक्तियों की वृद्धि को बड़े भय की दृष्टि से देखता हूँ।" यद्यपि ऊपर-ऊपर देखने में लगता है कि राज्य की बढ़ती हुई शक्ति शोषण का रोक-थाम करके लोगों का भला कर रही है, पर इससे मानव जाति को बड़ी हानि पहुँचती है क्योंकि इससे व्यक्तित्व, जो सभी प्रकार की उन्नति का मूल है, नष्ट हो जाता है।

2. राज्य के कम से कम हिंसा:— गाँधी जी सत्य और अहिंसा की शिक्षा देते हुए अहिंसात्मक समाज में 'राज्य' के लिए कोई स्थान नहीं होगा क्योंकि राज्य के शक्ति और कानून हिंसा या बल प्रयोग पर आधारित होते हैं। राज्य व्यक्ति की वैयक्तिकता का दमन करके सभी व्यक्तियों को एक ही साँचे में ढालने का प्रयास करता है। यह स्वावलंबन की भावना को नष्ट करके उसके व्यक्तित्व को कुंठित कर देता है। फिर भी राज्य एक आवश्यक बुराई है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है; उसके सामाजिक जीवन को नियमित करने के लिए राज्य का अस्तित्व आवश्यक है। उत्तम राज्य वह होगा, जो कम से कम हिंसा और बल प्रयोग से काम लेकर व्यक्तियों को गतिविधियों एच्छिक प्रयास (voluntary effort) से नियमित होने देगा।

3. राज्य का स्वरूप अहिंसात्मक होगा:— गाँधीजी लोगों को स्पष्ट राज्य के भी दो स्वरूप का वर्णन किया है। प्रथम - पूर्ण अहिंसा, जिसे वे रामराज्य कहते हैं और द्वितीय, कुछ अहिंसा, जिसे वे अहिंसात्मक समाज कहकर पुकारते हैं। अहिंसात्मक समाज पूरी तरह अहिंसा पर आधारित होगी। जहाँ हिंसा का विचार ही लुप्त हो जायेगा, वहाँ दंड या बल प्रयोग (use of force) की कोई गुंजाइश नहीं रहेगी। अतः राज्य जैसी संस्था की कोई आवश्यकता ही नहीं रहेगी। गाँधी के आदर्श समाज में राजनीतिक शक्ति को

Scanned by CamScanner

कोई ~~आवश्यकता~~ आवश्यकता नहीं रहेगी। गाँधी के अनुसार राज्य को शोषण, हिंसा पर टिकी है। अहिंसात्मक समाज में इसका कोई स्थान नहीं हो सकता। गाँधी जी नागरिकों को आवश्यकताओं और इच्छाओं को सीमित करने का सुझाव देते हैं ताकि

4. राज्य का कार्यक्षेत्र व्यापक नहीं होगा :— गाँधी राज्य के कार्यक्षेत्र को कम से कम रखने की बात की है। इनका कहना है कि अति राजकीय हस्तक्षेप व्यक्ति के स्वावलम्बन का विकास नहीं होने देता है। फ्रीमैन (Freeman) की भाँति गाँधी का भी यही विचार था कि सर्वोत्तम सरकार वह है जो कम से कम शासन करती है। राज्य का अत्यधिक हस्तक्षेप प्रजातांत्रिक प्रणाली के लिए घातक है। गाँधी जी ने ~~[illegible]~~ यद्यपि राज्य के कार्यों की कोई सूची तो नहीं प्रस्तुत की फिर भी उनका विचार व्यक्तिवादी, राज्य के बढ़ते हुए कार्य क्षेत्र को रोकना है। उन्होंने स्वयं लिखा है कि "मैं राज्य की बढ़ती हुई शक्तियों को बड़े भय तथा शंका की दृष्टि से देखता हूँ। यह व्यक्ति के ~~[illegible]~~ व्यक्तित्व का विनाश कर, मनुष्य जाति को सबसे अधिक हानि पहुँचाती है क्योंकि हम ऐसे कितने उदाहरणों को जानते हैं कि कहीं भी कोई राज्य गरीबों, हरिजनों के कल्याण के लिए नहीं रहा।"

5. राज्य वर्गहीन होगा :— गाँधी के अहिंसक समाज में प्रत्येक व्यक्ति का धर्म या सामाजिक दायित्व (Social obligation) एक सेवा का रूप धारण कर लेगा। इस व्यवस्था में प्रत्येक तरह की सेवा या काम को एक जैसा सम्मान की दृष्टि से देखा जायेगा, इसलिए इस व्यवस्था में वर्ग की सीढ़ियाँ समाप्त हो जायेंगी। गाँधी का यह विचार सर्वोदय के निकट है। जब इस व्यवस्था में अहिंसा को जीवन सिद्धान्त बना लिया जायेगा, तब किसी के मन में किसी के प्रति वैर-विरोध नहीं रहेगा और सभी सबके हित की बात करेंगे।

इस प्रकार गाँधी अपने आदर्श राज्य की रूप-रेखा प्रस्तुत की है। लेकिन प्रश्न उठता है कि गाँधी ने जिस अहिंसक समाज या राज्य की बात की है, वह इस धरती पर सम्भव होगा। गाँधी के अहिंसक समाज की स्थापना पूर्णरूपेण कभी सम्भव है। राज्य कभी भी पूर्णरूपेण अहिंसक नहीं बन सकते हैं। क्योंकि राज्य में सभी तरह के व्यक्ति रहते हैं। अन्त में कहा जा सकता है कि गाँधी के जिस ~~[illegible]~~ आदर्श राज्य की वकालत की है, वह निकट भविष्य में तो सम्भव नहीं दिख रहा है।

By.
H.O.D.
political science
BRABU., MUZ.

Scanned by CamScanner